Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MMHAPU
MJMC/SEM 1/Paper 101
Date- 12/06/2021

आलोचनात्मक और सांस्कृतिक सिद्धांत (Critical and Cultural Theories)

आलोचनात्मक और सांस्कृतिक सिद्धांत में संस्कृति उत्पादन की प्रक्रिया को 'आलोचनात्मक' रूप से देखा जाता है। यह सिद्धांत उन सामाजिक संरचनाओं और प्रथाओं का विश्लेषण करते हैं जो जन संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। यह सिद्धांत अक्सर समाज की समस्याओं को जनसंचार माध्यमों से जोड़ते हैं। इस सिद्धांत का मानना है कि मीडिया सामाजिक समस्याओं का निर्माता हैं। समाज की समस्याओं को बढ़ाने या रोकने के लिए मीडिया जिम्मेदार है। इस सिद्धांत को फ्रैंकफर्ट स्कूल का क्रिटिकल थ्योरी भी कहा जाता है। फ्रैंकफर्ट स्कूल से जुड़े सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक **'थियोडोर एडोर्नो, हर्बर्ट मार्क्यूज और मैक्स होर्खाइमर'** थे।

आलोचनात्मक सिद्धांत का उद्देश्य समाज की आलोचना करना और उसे बदलना है। यह सिद्धांत सामाजिक विज्ञान और मानविकी के कई विषयों पर लागू होता है। वर्ष 1960 के दशक के बाद एक अलग विषय के रूप में संचार का अध्ययन किया गया। हैबरमास ने महत्वपूर्ण आलोचनात्मक सामाजिक सिद्धांत को संचार के अध्ययन के रूप में वर्णित किया। इस सिद्धांत का उद्देश्य किसी संदेश का विश्लेषण इस दृष्टिकोण से करना है– जिसमें उस संदेश के क्या इरादे हैं और उसके क्या निहितार्थ हैं और मीडिया कैसे गलत संदेश से प्रचारित विचारधारा को सही ठहराता हैं। आलोचनात्मक सिद्धांत का अनुमान है कि जन माध्यम दुनिया को देखने के तरीकों को परिभाषित करता है जिसमें संस्कृति को एक उद्योग माना गया है। यह सिद्धांत विशिष्ट सामाजिक संस्थाओं का विश्लेषण करता है। इसमें जनसंचार माध्यम और जन संस्कृति को विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याओं के रूप में देखा जाता है।

सांस्कृतिक सिद्धांत में मीडिया उत्पादन भी संस्कृति उत्पादन की प्रक्रिया है। यह सिद्धांत व्यक्तियों और समूहों द्वारा लोकप्रिय संस्कृति सामग्री के उपभोग पर ध्यान केंद्रित करता है। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'गजनी' हेयरकट से लेकर प्रत्येक मीडिया संदेश एक उत्पाद है जो संस्कृति उत्पादन की प्रक्रिया का एक अंग है। वर्ष **1964 में रिचर्ड हॉगर्ट** ने ब्रिटेन में पहली बार **'सांस्कृतिक अध्ययन'** शब्द का प्रयोग किया। सांस्कृतिक अध्ययन मीडिया सामग्री के अध्ययन से संबंधित एक शाखा है जिसमें मीडिया सामग्री अर्थात कंटेन्ट का अध्ययन सांस्कृतिक संदर्भ में किया जाता है। सांस्कृतिक अध्ययन के विशेषज्ञ संस्कृति और उसके विभिन्न रूप, उत्पत्ति और संदर्भ को समझने का प्रयास करते हैं। जिसमें वर्ग, जातीयता, रंग और राष्ट्रीय पहचान जैसे सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। सांस्कृतिक अध्ययन

का उद्देश्य संस्कृति और उसके निर्माण को समझना है। इसका उद्देश्य न केवल संस्कृति और उसके निर्माण की प्रक्रिया का विश्लेषण करना है, बल्कि समाज में उसकी स्थिति का भी विश्लेषण करना है। इसमें सामाजिक प्रथाओं का निरंतर मूल्यांकन करने का प्रयास किया जाता है। इस अध्ययन में संस्कृति उपभोग को एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इस क्षेत्र में **स्टुअर्ट हॉल** और **जॉन फिस्के** का योगदान प्रमुख रूप से है। 1950 और 1960 के दशक के दौरान, जनसंचार के सांस्कृतिक सिद्धांतों में रूचि पहले यूरोप, कनाडा और अंत में अमेरिका में विकसित हुई। यह सिद्धांत इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि क्या मीडिया कंटेन्ट व्यक्तियों के विशिष्ट विचारों और कार्यों पर तत्काल और प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। इस सिद्धांत में मीडिया द्वारा प्रभावित सांस्कृतिक परिवर्तनों के दीर्घकालीन परिणामों के संबंध में वैचारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है।

*****